



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-

विनय कुमार भट्ट

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - विनय कुमार भट्ट

वो बचपन कहाँ से लाए



वो बचपन कहां से लाए

डिजिटल युग मे प्रवेश व विकास की रफ्तार के साथ समाज मे हो रहे नित नए परिवर्तन , व्यक्ति की सोच में बदलाव लिंगानुपात की असमानता से नए युग मे काफी कुछ खो चुका है और बहुत कुछ पा लिया है अपने लिए ।

एक समय था कि भाई बहनों के साथ घर मे मोहल्लों के बच्चों के साथ खेला करते थे कंचे ,ताश के पत्ते माचिस की ऊपरी हिस्से से सितोलिया , छुपाछूपी, पत्थर के छोटे टुकड़े पासीके आदि खेला करते थे तो कभी साइकिल टेम्पो के टायर, कभी रिंग को साइकिल की तानी को मोड़ कर रिंग चलाना तो कभी पेड़ के गोल फल को पहिए के रूप में गली मोहल्लों में चलाया करते थे कभी खेलते हुए गिरते थे तो कहते कुछ नही हुआ चींटी मर गई चल खड़ा होजा कभी चोट लगने पर खून निकलते तो फुंक मार दिया करते थे ।

वो गर्मी के दिनों में छोटे छोटे आम को नमक के साथ खाना, टिमरू ,रायणा , खजूर आदी फलों को खाने की अपनी मौज मस्ती कभी नदी तालाबो नहरों में नहाने जाते दोस्तो के साथ हर मौसम की अलग मस्ती बारिश में कंकड़ फेंकना, कागज की नाव बना कर , नहाना बार बार बारिश में भीगना मम्मी पापा की मार का जो मजा था

कभी मामा के घर जाना ,भुआ के घर जाना गर्मी में घर आंगन या छत पर रात को सोने के लिए बिस्तर या खाट लगाने से पहले बाल्टी भर कर पानी ले जाकर मगसे से छाटना वो पानी की खुशबू आह क्या महसूस होता था कभी स्नान भी कर लेना । रात को बिस्तर लग जाने पर खुद के बिस्तर पर किसी को सोने नही देना, कभी छत पर ही खाना खाना रात को वो मटके का पानी , सोते हुए चाँद तारों को देखना तारो की अलग अलग आकृति को देखने पर चाँद तारो से जुड़े प्रश्न मम्मी पापा दादा दादी भाई बहनों के साथ सोते हुए भी कहानी किस्से सुनना व बातें करना रात में गुजरते हुए एरोप्लेन की टिमटिमाती लाइट, वो चांदनी रात मे रात्रिचर जीवो की आवाजें ठण्डी ठंडी हवाओ के बीच कब नींद आती पता नही चलता ओर सुबह होने पर मुर्गे की बाग ,पक्षियों का कलरव गाय भेस का रंभाना आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को देखना वो छत से सूर्य के उदय होते हुए अलग अलग रंगों को देखना आस पास के मन्दिर व मस्जिद के अजान की आवाज क्या सुकून था।

उन दिनों दोस्तों के साथ खेलकूद करने और चोट लगने पर घर पर और डॉट पड़ती थी ऐसे में परिवार बड़ा व्यक्ति मारता ,डॉटता तो कोई पुचकारता ज्यादा रोने पर यह सुनने मिलता , बस इसको तुमने अपने लाड़ प्यार से बिगाड़ दिया है ज्यादा बोलता है नम्बर कम आने पर अपने परिवार के सगे सम्बन्धियों के बच्चों के अच्छे नम्बर व उनके गुणों के बखान करते । देखो उनके बच्चे कैसे हैं पढ़ने में ,काम में आदि आदि ।

आज वो बचपन कहीं दिखाई नहीं देता डिजिटल युग में सामाजिक ताना बाना में बिखराव में और मेरा परिवार की संकल्पना में बचपन का बचपना गुम हो गया है अब बहुत कम बच्चे खेल कूद करते हैं वो घरेलू खेल की जगह इंडोर गेम ने ले लिया है मोबाइल में विभिन्न वीडियो गेम खेलना आदत सी बन गई हैं बच्चे भी अब हैं कहां घर में दो या एक ही बच्चा क्या खेले किसके साथ खेले वो गलियां वो खेल के मैदान भी नहीं रहे

जिंदगी की जद्दोजहद व भागदौड़ में माता पिता के कारोबार ,व्यवसाय, नोकरी , घर के कामकाज की व्यस्तता के चलते समय अब कहाँ है समय

सबके अपने टाइम टेबल हैं घर में अब दादा दादी कहां रहे ।वो लाड़ प्यार दुलार सँस्कार अब कहाँ से लाए खाना बनाने वाली अलग झाड़ू पोछे के लिए अलग व दिनभर देखभाल के लिए अलग से काम करने वाले रखे हैं

अब तो बच्चे के जन्म से ही मोबाईल स्क्रीन से नाता जुड़ जाता है क्योंकि उसकी परवरिश भी मोबाइल पर व्हाट्सएप फेसबुक इंस्टाग्राम और विभिन्न रील को देखते हुई होती हैं । थोड़ा बड़ा होने पर आया के साथ बड़ा होता है अब कहाँ कोई अपने हाथ पर ,कंधे पर ,कमर पर बच्चे को कौन बिठाता है अब तो ट्रॉली व्हील चेयर , आ गई । वो बच्चे के साथ खेलना लोरी के गीत राजा रानी कहानी सुनाकर बच्चे को सुलाना , नहलाना , बाहर लेकर घुमाना अपनेपन का अहसास भी अब कम हो गया है आजकल तो बचपन जैसे संस्थान खुल गए हैं जो बच्चों को कुछ घण्टों के लिए अपने यहाँ रखते हैं जिसमें बच्चों को आकर्षित करने वाले खेल खिलौने होते हैं फिर स्कूल प्ले एल के जी यू के जी पढ़ता हुआ बड़ा होता है ऑफिस, स्कूल या अन्य कार्यस्थल पर बच्चे को ले जाने पर भी वह बिना मोबाइल नहीं रह सकता कार्टून या मोबाइल गेम खेलने से ही वह डिस्टर्ब नहीं करता सतत रूप से स्क्रीन स्क्रोल करता है सोचो उसकी आंखों व मनमस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता होगा ।

किसी परिचित के घर जाने पर भी मेल मुलाकात के बीच बच्चे द्वारा प्रणाम ,चरण स्पर्श दूर की बात हो गई ।

उसकी हर ख्वाहिश पूरी मोबाइल टेबलेट म्यूजिक सिस्टम ओर भी कई गेजेट्स के साथ युही बड़ा होता जाता हैं उसे तो मोबाइल पर दिए गए पिजा बर्गर अन्य सामग्री की तरह सबकुछ इस्टन्ट चाहिए , बच्चों से मोबाइल ले लेने पर परिवार को कई विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है गुस्सा तोड़ फोड़ लड़ाई झगड़े आदि कुछ तो करना होगा ।

मगर समय नहीं है किसी के पास किसी के लिए

वह प्यार ,सहयोग, दर्द ,प्रेम,आस्था, श्रद्धा विश्वास ,आदर ,सम्मान वो अहसास कहां से लाए वो प्रयास, परिश्रम, प्रतीक्षा कहां से लाए कुछ समय का प्रबंधन तो करना ही होगा , अपने लिए अपने बच्चों के लिए भावी पीढ़ी के लिए ताकि सामाजिक संस्कृति का बाना बना रहे शिक्षा के साथ सँस्कार भी अगली पीढ़ी को दे पाए

- विनय कुमार भट्ट



लेखक परिचय

नाम – विनय कुमार भट्ट





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**विनय कुमार भट्ट**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

